रात्रि क्लास 25/11/68 ओम शांति शिवबाबा याद है?

सबसे बड़ी बारात गाई गई है शिव की। शंकर की नहीं। जैसे शिव अशरीरी है वैसे आत्मा भी अशरीरी है। शिवबाबा की रूहानी बारात एक ही होती है। तुम हो सजनियाँ, वह है साजन। सभी से सुख देने वाला वह एक है। सतयुग में बारातें भी सुख देने वाली होती हैं। बाप घर में साथ ले जाते हैं, फिर वहाँ (सुखधाम) में साथ नहीं ले जाते। बच्चे जानते हैं साजन अथवा बाबा आया हुआ है, सभी बच्चों को शांतिधाम ले जावेंगे। सभी शांति के शौकीन हैं। सुखधाम की राय देने वाला कोई है नहीं सिवाय बाप के। शांत के लिए राय देते हैं; परंतु ले नहीं जाते। ऐसे-2 जब आते हैं तो हाथ में कुछ न कुछ देना चाहिए। शिवबाबा के तो जो भी सभी बच्चे हैं बारात हैं। कितनी बारात होंगी? 500 करोड़। बारात कहें वा फॉलोवर्स कहें। इतनी बड़ी बारात किसकी होती नहीं। तुम सभी शिव के पीछे जावेंगे ना। साजन ले जाते हैं शांतिधाम और सुखधाम। यह भी अगर सारे दिन में घंटा दो याद रहे तो यह भी बड़ी कमाई है। याद भी करना है तब ऊँच पद मिलेगा। बाप को याद करते(करने) से ही तुम सारे झाड़ के आदि-मध्य-अंत को याद करते हो। बच्चे भी मास्टर बीज रूप ठहरे। तुम्हारी भी बुद्धि में यह आना चाहिए। बाप को नित्य याद है। भाइयों को नित्य याद नहीं होती है। भूल जाते हैं। यह याद रहे तो खुशी भी रहे; परंतु माया खुशी में आने नहीं देती है। कोई न कोई किचड़ पट्टी में ले जाती है। बाप बहुत ऊँच ते ऊँच है। उनको भूलने से आत्मा किचड़पट्टी में चली जाती है। तुम बच्चे थोड़ा समय बाप को याद करते हो। बाकी सारा समय किचड़ पट्टी में रहते हो। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं जो भगवान के डिफीनेशन(डेफिनेशन) को जानता हो। तुम जानते हो; परंतु याद नहीं कर सकते हो।

पटना का समाचार अच्छा लिखा है। ऐसे मकान मिलते हैं तो फट से उसी समय जमा देना चाहिए। क्या किया, उसकी पूरी रिज़ल्ट नहीं लिखी है। अधूरा समाचार इसको कहा जाता है। चित्र ले गये वा नहीं, पूरा दिल पसंद समाचार न लिखा है। समझते हैं सर्विस अच्छी की; परंतु समाचार ऐसे देते हैं जो बाप कहते हैं, जो सर्विस होनी चाहिए वह न हुई। सर्विस वृद्धि को पाते हैं तो बच्चों का हुल्लास भी बढ़ता है। अभी सर्विस ठंडी है। तो बच्चों का भी हौसला भी..... और बाकी भी विनाश नज़दीक होगा तो और ही हौसला बढ़ जावेगा। यह तो बच्चे समझते हैं हम अपने सतोप्रधान दुनिया के नज़दीक आते जाते हैं। फिर जाकर पहुँचेंगे। कितना ऊपर से नीचे आकर पहुँचे हैं। कितना बड़ा धक्का लगा है! हड्डी-2 चूर हो गई सारी भारत की। बाप आते हैं फिर हर बात में तंदरुस्त कर देते हैं। तो खुशी होनी चाहिए और खुशी से ही रास्ता बताना चाहिए। कितना अपार सुख तुम अकेले भारतवासी देवताएँ देखते हो! और कोई के तकदीर में नहीं है। आगे चलकर वण्डर भी खावेंगे। क्यों तुम्हारा ही सिर्फ स्वर्ग में पार्ट है? हमारा पार्ट नहीं है? तुम समझावेंगे यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। तो कहेंगे–अच्छा, स्वर्ग में नहीं तो शांतिधाम में ही जाना अच्छा। बाकी मंज़िल है बहुत भारी। युद्ध के मैदान में आधा-2 जीत होती है माया की। हार-जीत का खेल है ना। जितना वह शक्तिवान, उतना वह। तुम जितना जीतते होंगे, उतना हराते भी होंगे। बाप सर्वशक्तिवान है तो माया भी सर्वशक्तिवान है। बहुतों को माया गिराती है। तो हड्डी गुड्डी ही चूर कर देती है। स्वर्ग तक पहुँच नहीं सकते। बना बनाया ड्रामा है। भगवान को भी पतित दुनिया में आना ही है। तुम्हारी बुद्धि अभी बेहद में चली गई है। सेकण्ड व सेकण्ड एक्ट रिपीट होती रहती है। शूट भी होता रहता है। इसलिए इनको एवर न्यू कहा जाता है। कब घिसता नहीं। आत्मा भी देखो कैसा रिगार्ड(रिकार्ड) है। सदैव अपना पार्ट रिपीट करती रहती है। इनको भी वण्डर अथवा कुदरत कहेंगे ना। तुमको सभी सा॰ होते रहेंगे। वहाँ सोने की ईटें आदि कैसे बनते हैं। महल कैसे बनते हैं। सभी देखेंगे, जो पिछाड़ी में रहेंगे। पिछाड़ी में रहना कोई मासी का घर नहीं। क्या-2 तुम देखेंगे बात मत पूछो। टीचर तो सभी के चलन को जानते हैं। यह भी जानते हैं कौन क्या पद पावेंगे। हरेक की चलन को जानते हैं तब तो सावधान करते हैं। गफ़लत छोड़ो, नहीं तो पिछाड़ी में बहुत हाय-हाय करेंगे। बहुतों को पता नहीं पड़ता कि शिवबाबा हमारे चलन को भी देखते हैं। ऐसे भी समझते हैं इसमें कोई (हर)कत काम करती है। शिवबाबा थोड़े ही है। ओम।